INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED & MULTILINGUAL STUDIES

UGC Approved Research Journal (Sr. 47674)

Volume V
Issue II

ISSN : 2394-207X (Print)
IMPACT FACTOR : 4.205

February 2018

A Galaxy of Scholarly Written Research Papers/Articles

ijmms

Cosmos

Chief Editor
Dr. V. H. Mane

Executive Editor
Prof. M. P. Shaikh

www.ijmms.in

Email : ijmms14@gmail.com

Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Ta. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

Savitribai College of Arts
ID. No.
PU/AN/A/
58/1999

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND MULTILINGUAL STUDIES

UGC Approved Research Journal (Sr. 47674)

Editors: Dr. V. H. Mane, Prof. M. P. Shaikh

Language: Multilingual

Published by

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND MULTILINGUAL STUDIES

Sneh Apartment,
Flat No. 001, Samarth Nagar, New Sangvi,
Pune- 411027

Copyrights: Editors 2014

All rights reserved

ISSN: 2394-207X (Print)
IMPACT FACTOR: 4.205

VOLUME-V, ISSUE-II

February -2018

Savitribai College of Arts
ID. No.
PU/AN/A/
58/1999
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

35	CULTURAL CONFLICT IN KIRAN DESAI'S *"THE INHERITANCE OF LOSS"*	Prof. Pranjali B. Vidyasagar	144-147
36	Literary Theory in Practice: A Case of Arun Kolatkar's Jejuri in light of Intentional Fallacy	Parag Prakash Chaudhari	148-151
37	Impact of ICT on College Libraries	Mr. Sumedh S.Gajbe	152-154
38	महाराष्ट्रातील कृषी विकास आणि पिकरचनेतील बदलत्या प्रवृत्ती	प्रा. डॉ. सोमनाथ वसंतराव पाटील	155-158
39	हरितगृह शेती तंत्राचे अर्थशास्त्र	प्रविण भाऊसाहेब विखे [1] प्रा. डॉ. एस. जी. शिंदे [2]	159-162
40	ग्रामीण विकासात स्थानिक स्वराज्य संस्थांची भूमिका (महाराष्ट्राचा विशेष संदर्भ)	प्रा.डॉ.बोरावके के.एस्.	163-165
41	विविध कार्यकारी सेवा सहकारी पत संस्थांचे ग्रामीण विकासातील योगदान (विशेष संदर्भ :कर्जत तालुका, सन १९९९–०० ते २००८–०९)	प्रा.डॉ.सचिन रमेश तोरडमल	166-168
42	भारतातील टोमॅटो उत्पादन व विपणन विषयक समस्या व उपाययोजना	प्रा. साहेबराव दौलत निकम	169-171
43	कृषि व ग्रामिण विकासात नाबार्डची भुमिका	प्रा.वासनीकर शामराव लक्ष्मण	172-173
44	महाराष्ट्रातील शेती: सद्यस्थिती, समस्या आणि आव्हाने	प्रा. डॉ.हनुमंत पोपट शिंदे	174-180
45	मानव अधिकार आणि भारतीय शेतकऱ्यांची सद्यस्थिती	प्रा.डॉ.अंकुश दादाराव काळे	181-184
46	भौगोलिक घटकांचा महाराष्ट्रातील शेतीच्या शाश्वतीकरणावर होणा-या परिणामांचा अभ्यास	प्रा.डॉ. रविंद्र सुदाम भगत	185-188
47	हिंदी कथा साहित्य में समाज एवं संस्कृति	डॉ. बेबी कोलते	189-191
48	समकालीन हिंदी कहानी में चित्रित नारी जीवन	प्रा. नानासाहेब जावळे	192-195
49	फणीश्वरनाथ 'रेणु' की कहानियों में ग्रामीण समाज एवं संस्कृति	डॉ. मनोहर जमदाडे	196-198
50	'हिंदी कथा साहित्य में समाज एवं संस्कृति' (मोहनदास नैमिशराय कृत'महाशुद्र'के संदर्भ में)	डॉ. वंदना तुकाराम काटे	199-201
51	हिंदी आलोचना का विकास एवं स्त्री विमर्श	प्रा.डॉ. भगत सारिका	202-203
52	आलोचना उद्भव और विकास	प्रा.नामदेव शितोळे	204-207
53	साहित्य एवं आलोचना : पुनर्विचार की आवश्यकता	डॉ. राजेन्द्र खैरनार	208-211
54	Agriculture Planning of Gondia District in Maharashtra State	[1]Dr. Devendra K. Bisen [2]Prof.Hanumant Dattatraya Shinde	212-214

Savitribai College of Arts ID. No. PU/AN/A/ 58/1999 Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

आलोचना उद्‌भव और विकास

प्रा.नामदेव शितोळे
सावित्रीबाई कला महाविद्यालय, पिंपळगांव पिसा,तह. श्रीगोंदा, अहमदनगर

उद्‌भव और विकास–हमारे साहित्य में आलोचना शास्त्र का विकास बिल्कुल आधुनिक युग में शास्त्रीय दृष्टि सें हुआ है । आज यह आलोचना कला एक विधा के रूप मे हमारे सम्मुख आयी हुई है । परंतू यह मानना अनुचित होगा की आलोचना आधुनिक युग में ही लिखी गई । प्राचिन काल में साहित्य शास्त्रों के अनुसार (रस, ध्वनि) की आलोचना की जाती थी । यह परंपरा भक्तिकाल ,रीतिकाल में थी और इन्हें काव्यशास्त्र के सिध्दांतो के अनुसार आधुनिक काल प्रारंभ होने तक आलोचना की जाती थी। लेकीन बिल्कुल शास्त्रीय दृष्टी से आलोचना करने का प्रयास आलोचक केशवदास ने किया है ।

हमारी दृष्टी सें केशव को हिंदी का पहला आलोचक माना जाना चाहीए । उनके ग्रंथ कविप्रिया, रसप्रिया आलोचना ग्रंथ है । इन ग्रंथो में आपने काव्यशास्त्र के लिए सूत्र दिए है । इन सूत्रों में रस नायिका भेद नखशिख आदि का संस्कृत ग्रंथो के आधार पर प्रणयन किया है ।इन्ही काव्यशास्त्र के सिध्दांत पर बाद मेंआलोचना लिखी जाने लगी । इसलिए ही आलोचक केशवदास को हिंदी का प्रथम आचार्य माना जाता है ।रीतिकाल में जो आलोचनाका रुप हमारे सामने आता है ।जैसे

सुर सुर तुलसी गंग भै दोऊ कपित के सरदार ।

इस तरह रीतिकाल में आलोचना साहित्य संस्कृत के समिक्षा सिध दांतो के आधार पर लिखा जाता था ।जिसका उद्देश रसीक जनां को काव्याास्त्र का परीचय देना था । इस प्रकार की आलोचना भारतेंदु युग के पूर्व दिखाया देता है ।

भारतेंदुयुगीन आलोचना–यह आलोचना पत्र –पत्रिकाओंमें प्रकाशन के साथ लिखी गई आलोचना साहित्य का भी सुत्रपात भारतेंदू युग मे ही हुआ था । इसका प्रांरंभ भारतेंदु जी ने किया है । क्योंकि वे एक बहुमुखी प्रतिभा के साहित्य कार थे भारतेंदु जी ने नाटक नामक ग्रंथ लिखा है जो भरतमुनी के नाटयशास्त्र पर आधारित है । इस ग्रंथ में उन्होंने काव्याास्त्र के सिध दातों को लेकर नाटक की आलोचना की है। इस ग्रंथ की प्रमुख विशेषता यह है कि इस आलोचना पर पाश्चात्य काव्याशास्त्र का प्रभाव है । भारतेंदु युग में जो अन्य आलोचक है उनमें प्रमुख प्रेमघन है ।जिन्होने अपनी पत्रिका आनंद कादंबिनी मे लाला श्रीनिवादास व्दारा संयोगिता स्वयंवर की आलोचना की है । बालकृष्ण भट्ट ने अपनी पत्रिका हिंदी प्रदीप में संयोगिता स्वयंवर की सची अलोचना शिर्षक आलोचना की है ।

इस तरह तीनों प्रमुख आलोचक भारतेंदूजी के साथ है ।इनकी आलोचना का अवलोकन करके के बाद में इस प्रकार की विशेषताए ।

१)सैंध्दातिक आलोचना पद्धति –इस युग में साहित्य शास्त्र के समीक्षा के सिध दांतो को लेकर उनके आधार पर आलोचना की गई रसाशास्त्र की दृष्टी से अलंकारशास्त्र आदी आलोचना हुई ।

२) सुत्र रुप में आलोचना – भारतेंदु युग में युक्तियो के सूत्र टिप्पणियो के रुप मेंआलोचना लिखी जाती थी ।

३)भावात्मक आलोचना – इस युग में जो आलोचना लिखि गई वह कवियोंकी दृष्टि से न होकर आलोचक की दृष्टि से है ।आलोचक ने जैसा समजा उसी को वैसा ही आलोचना रुप में लिखा ।

Savitribai College of Arts ID. No. PU/AN/A/ 58/1999 Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar
PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

व्दिवेदी युगीन आलोचना–व्दिवेदी जी के आलोचना साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की ।आपकी प्रेरणा सें अनेक लेखकोनें अनेक पुस्तकों की आलोचना की । व्दिवेदी जी के समकालीन लेखक गंगाप्रसाद अग्निहोत्रीने समालोचना नामक आलोचना ग्रंथ लिखे है। इन दोनो ग्रंथोका भी व्दिवेदीयुग में महत्वपुर्ण स्थान है । किंतु इस युग के प्रमुख आलोचक म. प. व्दिवेदी है।

म.प्र. व्दिवेदी के ग्रंथ –

१) कालीदास की निरंकुशता – इस ग्रंथ में उन्होने भाषा और व्याकरण की. दृष्टि सें कालीदास की आलोचना की और कालीदास की भाषा को संस्कृत की शुध्द भाषा सिध्द किया है । और कालीदास की बहुत प्रशंसा की है ।

२) नैषद चरित चर्चा– इस ग्रंथ में आपने आलोचना के सिध्दातों के अनुसार आलोचना की ।इसी प्रकार व्दिवेदीजी ने छायावाद की कटू आलोचना की हैं सुर तुलसी की तुलनात्मक आलोचना की है।

व्दिवेदी जी के अतिरिक्त इस युग में मिस्त्र बंधू ,किशोरिलाल गोस्वामी, कामता प्रसाद गुप्त, गौरी शंकर ओझा भी है व्दिवेदीजी के समय काशी नागरी प्रचारणा सभा काशी इसी प्रकार हिंदू विश्वविद्यालय बनारस व्दारा अनेक आलोचना ग्रंथ लिखे गये ।

विशेषताएँ

१) इसमें संस्कृत और हिंदी के कवियों को लेकर उनपर विस्तृत आलोचना की है।

२) तुलनात्मक आलोचना –देव बिहारी

३) इस समय की आलोचना का मुल स्वर प्राय: परिचयात्त्मक त्तथा व्याख्यात्मक था।

४) व्दिवेदी युगीन आलोचना में प्राय परंपरावादी दृष्टि अपनायी ।

५)पाश्चात्य आलोचको की आलोचनात्मक कृतियोंका अनुवाद इस काल मेंआलोचना क्षेत्र की व्यापकता और विस्तार के आयामोंको निर्देशित करता है ।

शुक्ल युगीन आलोचना

१) रामचंद्र शुक्ल –इस आलोचना सम्राट न केवल भारतीय एवं पाश्यात्य समिक्षा सिध्दांतों को एक विशिष्ट समन्वित्त रुप प्रदान किया अपनी हिंदी आलोचना को सर्वथा विशिष्ट एव स्वतंत्र रुप से विकसित किया । आपकी ग्रंथ रचनाएँ वैविध्यपूर्ण है रस मीमांसा, त्रिवेणी आलोचना चिंतामणी(दो भागोमें)

२)विश्वनाथ प्रसाद मिश्र– यह सैध्दांतिक और व्यवहारिक पध्दति के आलोचक विव्दान है । रामचरित मानसके काशिराज संस्करण, वाड:मय विमर्श, बिहारी की वाग्विभुति ।

३)बाबु गुलाबराय– आपने आलोचना जैसे दुरुह और जटिल विषय को सुबोध बनाया सिध्दांत और अध्ययण, काव्य के रुप , अध्ययन और आस्वाद, हिंदी काव्य विमर्श, प्रसाद तुलसी की काव्यकला

४)श्याम सुंदरदास– साहित्यालोचन, भाषा और साहीत्य, कबीर ग्रंथावली ।

५) सेठ कन्हैलाल पोतदार– रस मंजरी, अलंकार मंजरी, साहित्य समिक्षा

६) लक्ष्मीनारायण सुधांशु– काव्य मे अभिव्यंजनावाद, सहजानुभुती

७) कृष्ण शंकर शुक्ल– रत्नाकर केशव की काव्यकला

८) नंददुलारे वाजपेयी– आपने आलोचना की आधिक संगत एंव वैज्ञानिक बनाने मे बडा योगदान दिया है । हिंदी साहित्य बीसवी शती ,नया साहीत्य, जयशंकर प्रसाद ।

विशेषताएँ

Savitribai College of Arts ID. No. PU/AN/A/ 58/1999 Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar
PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

१) आदर्शवादी आलोचना - जब हम इस युग की आलोचना का अध्ययन करते है तो यह आलोचनाएँ आदर्शवादी दिखती है । नैतिक मुल्यों की दृष्टी से आलोचना की है इस कारण ही शुक्लजीने कबीर की कटू आलोचना की है

२) शास्त्रीय समीक्षा सिध्दांतो के आधार पर - आलोचनाने संस्कृत के या पाश्चात्य साहीत्यशास्त्र का आध्ययन करके इस युग मे आलोचना लिखनेका प्रचार किया है ।

३) तर्कपूर्ण शैली - इस युग की आलोचना मे ग्रंथो के प्रति साहित्यकारो के प्रति जो विचार प्रकट किए है वे विशुध्द तर्कशास्त्र पर आधारीत इसलिए ये आलोचनाएँ वैज्ञानिक हुई ।

४) पाश्चात प्रभाव - इस युग की आलोचना मे सुखांत और दु:खांत प्रसंग के अंत को ध्यान मे रखकर आलोचना की है । पाश्चात्य साहीत्य दु:खात निराशावाद को प्रकट करता है । इस आलोचको ने भी इस मानदण्ड को लेकर आलोचना की है

शुक्लोत्तर युगीन आलोचना

१) डॉ. ह. प्र द्विवेदी- आपने मानवतावादी और ऐतिहासीक दृष्टि से आलोचना की है आपकी आलोचना में भारतीय साहित्य का दर्शन होता है । आपकी आलोचना को सौध्दांतिक और व्यवहारिक दो प्रकारो से विभाजित किया जा सकता है कबीर नाथ संप्रदाय, सुर साहित्य, हिंदी साहित्य

२) डॉ. नगेंद्र- सुमित्रानंदन पंत, साकेत एक अध्ययण, आधुनिक हिंदी नाटक, देव और उनकी कविता, रस सिध्दांत आदि आपकी आलोचना में वैज्ञानिकता है । भारतीय काव्य सिध्दांतो के साथ साथ पाश्यात्य काव्य सिध्दातोंका समन्वय मिलता है ।

३) आ. नंदकुमार दुलारे वाजपेयी- आलोचना साहीत्य में आपने मौलिक उद्भावना की है आप छायावादी, स्वच्छंदतावादी, सौष्ठववादी, एवं रसवादी आलोचक है । ग्रंथ महाकवी सुर निराला, प्रेमचंद, साहीत्य का विवेचन आदी।

४) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र- वाड:मय विमर्श बिहारी वाग्विभूती

५) शिवदान सिंह चौहाण - प्रगतीवादी साहीत्य की परख, आलोचना के मान

६) गुलाबराय -प्रसाद की कला, हिंदी काव्य विमर्श

७) प्रकाशचंद्र गुप्त-नया हिंदी साहीत्य, आधुनिक हिंदी साहीत्य

८) डॉ. रामविलास शर्मा- भारतेंदू हरिश्चंद्र प्रेमचंद और उनका योग, निराला, अस्तित्ववाद और नयी कविता

९) अज्ञेय- त्रिशंकु, आत्मनेपद

१०) इलाचंद्र जोशी- साहित्य सर्जना, विवेचना, विश्लेषण

११) देवराज उपाध्याय- आधुनिक हिंदी कथा साहित्य और मनोविज्ञान

विशेषताएँ

१)भारतीय संस्कृति का दर्शन

२) मानवतावादी दृष्टिकोण

३) व्यवहारिक आलोचना

४) काव्यसौष्ठव की और आधिक ध्यान

स्वातंत्र्योत्तर आलोचना-इसकाल में आलोचना के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोन आपनाया गया अनेक सिध्दतोंके आधारपर जैसे विकासवादी मार्क्सवादी मनोविश्लेषण को अपनाकर आलोचना लिखी गई । इस काल मेंआलोचना वादो के रुप में मिलती है ।

Savitribai College of Arts ID. No. PU/AN/A/ 58/1999 Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar
PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

१) विकासवादी सिध्दांत के आलोचक- इसमे डॉ माताप्रसाद गुप्त का नाम उल्लेखनीय है । [illegible] महत्वपूर्ण आलोचना ग्रंथ है । अन्य आलोचको में डॉ. नगेंद्र, डॉ. सत्येद्र, ह. प्र. द्विवेदी आदि [illegible]

२) मार्क्सवादी आलोचना -यह आलोचनाएँ. कार्ल मार्क्स साम्यवाद को ध्यान में [illegible] आलोचक डॉ. राम विलास शर्मा, डॉ. नामवरसिंह आदि है। डॉ शर्मा ने इस दृष्टि से [illegible] छायावाद, रहस्यवाद, आधुनिक साहित्य की प्रवृतियाँ आदि ग्रंथ प्रसिध्द है

३) मनोविश्लेणात्मक आलोचना -आज कल इसी दृष्टि से आलोचना लिखी जाती है । [illegible] साहित्य के प्रभाव से हिंदी में आयी है । इनका आधार फ्राईड का मनोविज्ञान है । इस [illegible] मनुष्य के अंतर्द्वव्द का चित्रण इन आलोचनामे किया जाता है । मुख्य आलोचक अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी आदि ।

४) सैध्दांतिक आलोचना- काव्यशास्त्र के सिध्दांत को आधार बनाकर जो आलोचनाएँ लिखी जाती है [illegible] सैध्दातिक आलोचना होती है । इन आलाचको में सुप्रसिध्द डॉ नगेंद्र, डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित [illegible] सिध्दात स्वरुप और विश्लेषण ,डॉ. गणपतीचंद्र गुप्त का साहित्य विद्वान, अज्ञेय का [illegible] नयी कविता का आत्मसंघर्ष ।

विशेषताएँ

१) आलोचना में वैज्ञानिक दृष्टिकोन

२)वादों के अंतर्गत आलोचना

३) सौंदर्य शास्त्रोकों महत्व

४) व्यक्तिवादी आलोचनाएँ

संदर्भ ग्रंथ

१) हिंदी आलोचना-विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन

२) हिंदी साहित्य का इतिहास(आधुनिक काल) हिंदी आलोचना का विकास-रुपेश कुमार शुक्ल

३) आलोचना समय और साहित्य- रमेश दवे,प्रकाशक -भारतीय ज्ञानपीठ

४) आधुनिक आलोचना- डॉ. मंजुला मोहन

५) आलोचना का स्वरूप- राजीव कुमार कुंवर

Savitribai College of Arts ★ Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar ★ ID. No. PU/AN/A/58/1999

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar